महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

एवं

कला संकाय

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

भारत–नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक

विषयक

तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

फाल्गुन कृष्ण पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी, कलियुगाब्ध 5125

विक्रमी संवत् 2080, नेपाली संवत् 1144, तद्नुसार - शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार

दिनांक 1, 2 एवं 3 मार्च, 2024

आमंत्रण

सेवा में,

श्रीयुत् _____

_____

_____

प्रेषक :

डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.ac.in • E-mail : mpmpg5@gmail.com

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

एवं

कला संकाय

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

भारत-नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक

विषयक

तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

फाल्गुन कृष्ण पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी, कलियुगाब्ध 5125

विक्रमी संवत् 2080, नेपाली संवत् 1144, तद्नुसार - शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार

दिनांक 1, 2 एवं 3 मार्च, 2024

उद्घाटन समारोह

01 मार्च, 2024 • समय : प्रातः 10:00 से 12:00 बजे

आयोजन स्थल : श्रीराम सभागार, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मंचासीन अतिथि

कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य

माननीय कुलपति, लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल

सारस्वत अतिथि

प्रो. नन्द बहादुर सिंह

उप कुलपति, मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल

मुख्य अतिथि

मा. देवेन्द्र राज कण्डेल

पूर्व गृह राज्यमंत्री, नेपाल सरकार, काठमाण्डू, नेपाल

विशिष्ट अतिथि

प्रो. (डॉ.) भागवत ढकाल

प्राचार्य, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाण्डू, नेपाल

बीज–वक्तव्य

प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा

पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

समापन समारोह

03 मार्च, 2024 • समय : अपराह्न 02:00 से 04:00 बजे

आयोजन स्थल : **श्रीराम सभागार, महाराणा प्रताप महाविद्यालय,** जंगल धूसड़, गोरखपुर

मंचासीन अतिथि

कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो. पूनम टण्डन

माननीय कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

मुख्य अतिथि

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी

माननीय कुलपति, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश

विशिष्ट अतिथि

प्रो. (डॉ.) सुधन कुमार पौडेल

कार्यकारी निदेशक, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, दाङ, नेपाल

विशिष्ट अतिथि

डॉ. सुबोध शुक्ला

आचार्य संस्कृत विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू, नेपाल

विशिष्ट अतिथि

श्री नारायण प्रसाद ढकाल

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद्, काठमाण्डू, नेपाल

संगोष्ठी प्रतिवेदन

डॉ. अमित कुमार उपाध्याय

सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

संगोष्ठी संक्षिप्तिका

01 मार्च 2024

पंजीकरण	–	प्रातः	08:30 बजे
चाय–जलपान	–	प्रातः	09:00 से 09:45 बजे
उद्घाटन	–	प्रातः	10:00 से 12:00 बजे
भोजन	–	अपराह्न	12:15 से 01:15 बजे
प्रथम तकनीकी सत्र	–	अपराह्न	01:30 से 03:00 बजे
द्वितीय तकनीकी सत्र	–	अपराह्न	03:15 से 04:30 बजे
स्वल्पाहार	–	सायं	04:30 से 05:00 बजे

02 मार्च 2024

तृतीय तकनीकी सत्र	–	प्रातः	09:30 से 10:30 बजे
चाय–जलपान	–	प्रातः	10:30 से 11:00 बजे
चतुर्थ तकनीकी सत्र	–	प्रातः	11:15 से 12:30 बजे
भोजन	–	अपराह्न	12:30 से 01:30 बजे
पंचम तकनीकी सत्र	–	अपराह्न	02:00 से 03:30 बजे
स्वल्पाहार	–	अपराह्न	03:45 से 04:15 बजे
गोरखनाथ मंदिर भ्रमण	–	सायं	04:30 से 07:00 बजे

03 मार्च 2024

समूह परिचर्चा सत्र	–	प्रातः	10:00 से 12:00 बजे
भोजन	–	अपराह्न	12:30 से 01:30 बजे
समारोप	–	अपराह्न	02:00 से 04:00 बजे
स्वल्पाहार	–	सायं	04:00 से 04:30 बजे

संगोष्ठी में आप सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक

डॉ. पद्मजा सिंह | डॉ. सुबोध कुमार मिश्र

Website : www.mpm.ac.in • E-mail : mpmpg5@gmail.com

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

एवं

कला संकाय

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

भारत-नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक

विषयक

तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

फाल्गुन कृष्ण पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी, कलियुगाब्ध 5125

विक्रमी संवत् 2080, नेपाली संवत् 1144, तद्नुसार - शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार

दिनांक 1, 2 एवं 3 मार्च, 2024

'भारत–नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक'

पर्वतराज हिमालय की गोद में बसा, प्रभुतासम्पन्न और हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के प्रति अटूट निष्ठा तथा श्रद्धाभाव रखने वाला नेपाल न सिर्फ भारत का एक पड़ोसी देश है, अपितु हमारा सांस्कृतिक साझीदार एवं सामरिक सहोदर भी है। भारत और नेपाल के बीच सम्बन्ध दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक विरासत में अन्तर्निहित आदर्शों, मूल्यों एवं सिद्धान्तों पर आधारित है। यही साझा संस्कृति, आदर्श, मूल्य एवं सिद्धान्त दोनों देशों की जनता के बीच आज भी मित्रता एवं आपसी सद्भावना के ठोस एवं प्रगाढ़ आधार बनें हुए हैं। भारतीय संस्कृति के कण–कण में बसे देवाधिदेव भगवान शिव के निवास स्थान तथा जगदम्बा माँ पार्वती और जग–जननी देवी सीता के पितृगृह के रूप नेपाल की पहचान सुविदित है। संपूर्ण नेपाल पग–पग पर हिन्दू देवी–देवताओं, बौद्ध मंदिरों–मठों, सिद्ध योगियों (विशेष तौर पर नाथपंथी योगियों) की तपस्थलियों से पटा–पड़ा है। वर्तमान भारतीय सीमा से सटे पश्चिम से पूरब 550 मील लम्बे तथा उत्तर से दक्षिण 120 मील चौड़े पट्टिका के रूप में उत्तराखण्ड से सिक्किम तक नेपाल भू–भाग का विस्तार देखा जा सकता है।

भारत की नेपाल से घनिष्ठता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि सनातन भारतीय संस्कृति एवं धर्म से ओत–प्रोत 18 पुराणों में से एक स्कन्दपुराण में नेपाल महात्म्य नामक एक संपूर्ण अध्याय आबद्ध है। इस अध्याय में नेपाल की विभिन्न परम्पराओं, रीति–रिवाजों, सामाजिक नियमों एवं संस्कारों का वर्णन है, जो पूर्ण रूपेण प्राचीन हिन्दू संस्कृति से मेल खाती है। वैदिक ग्रन्थ अथर्ववेद में भी नेपाल का उल्लेख मिलना इस साम्यता को पुष्ट करता है। भगवान बुद्ध का जन्म स्थान नेपाल के लुम्बिनी में है, तो उनका पहला उपदेश हम भारत के सारनाथ में प्रसरित होता देखते हैं। स्पष्ट है कि धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषायी समानताओं ने जहां एक ओर दोनो देशों के बीच स्नेहिल सम्बन्धों की नींव रखी है, तो वहीं दूसरी ओर भौगोलिक निकटता ने उसे और अधिक मधुर बनाने में योगदान दिया है। अत्यन्त प्राचीन काल से भारत और नेपाल दोनों ही देशों के नागरिक एक–दूसरे के क्षेत्रों में निर्बाध रूप से आते–जाते रहे हैं। यह क्रम आज भी जारी है। आज भी नेपाल जाने के लिए किसी भी भारतीय नागरिक को या भारत आने के लिए किसी भी नेपाली नागरिक को पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं होती है। वस्तुतः आज भी भारत और नेपाल का जनमानस एक दूसरे में इस तरह से घुला मिला है कि बिना किसी सन्देह के हम कह सकते हैं कि नेपाल और भारत में आज भी 'रोटी–बेटी' का सम्बन्ध है।

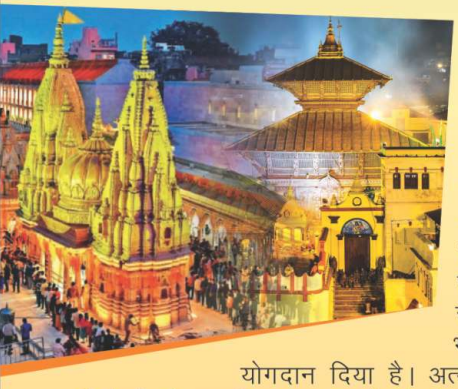

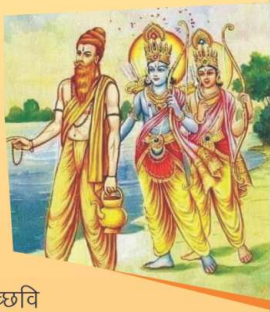

वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल की ही भांति महाकाव्य काल में भी भारत का नेपाल से सम्बन्ध जग–जाहिर है। माता सीता की गृहनगरी जनकपुरी की पहचान आज नेपाल के जनकपुर से ही की जाती है। नेपाल के लिच्छवि राजवंश की राजधानी वैशाली थी। बाल्मीकि रामायण में उल्लेख मिलता है कि मिथिला जाते समय राम ने गंगा के उत्तरी तट पर खडे होकर वैशाली को देखा था।

''उत्तरं तीरमासाद्य सम्पूज्यर्षिगणं ततः।
गंगाकूले निविष्टास्ते विशालं ददृशुः पुरीम''।

(बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 45–9)

छठीं शताब्दी ई.पू. के राजनैतिक घटनाक्रमों में भी नेपाल और नेपाली लिच्छवि राजवंश का उल्लेख यदा–कदा मिलता रहता है। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थकर भगवान महावीर एवं बौद्ध धर्म प्रवर्तक गौतम बुद्ध के समकालीन मगध महाजनपद के प्रथम राजवंश हर्यक वंशीय शासक बिम्बिसार नें लिच्छवि कन्या चेलना से विवाह किया था। इन उल्लेखों से तत्कालीन समय में भी भारत का नेपाल से अटूट सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है।

गुप्त साम्राज्य के प्रथम स्वतंत्र शासक चन्द्रगुप्त प्रथम का विवाह नेपाल के लिच्छवि राजकुल की कन्या कुमार देवी के साथ हुआ था। इस तथ्य का ज्ञान हमें गुप्त अभिलेखों एवं मुद्राओं से होता है। इसी वैवाहिक सम्बन्ध से भारतीय इतिहास के पराक्रमी और अप्रतिरथ शासक समुद्रगुप्त का जन्म हुआ था, जिसने गुप्त शासन के प्रभाव को संपूर्ण भारत वर्ष सहित भारतीय भौगोलिक सीमाओं के परे भी प्रसारित किया। लिच्छवियों से सम्बन्धित होने के कारण समुद्रगुप्त को गुप्त अभिलेखों में सगर्व लिच्छवि दौहित्र कहा गया है। इतना ही नहीं गुप्तों ने इस वैवाहिक सम्बन्ध की स्मृति में चन्द्रगुप्त कुमारदेवी युगल का सिक्का भी चलवाया था। लिच्छवियों से वैवाहिक सम्बन्ध हो जाने के ही उपरान्त सम्भवतः चन्द्रगुप्त प्रथम ने पूर्वी उत्तर–प्रदेश के प्रयाग और साकेत क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि गुप्त राजवंश के उत्थान और विकास में नेपाली लिच्छवियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

ब्रिटिश काल में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध नेपाल ने भी भारत की तरह स्वतन्त्रता संग्राम छेड़ रखा था। वास्तव में 18वीं–19वीं सदी का समय साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का दौर था। इंग्लैंड में यह काल पामर्स्टन और डिजरायली जैसे साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञों का काल था जो उपनिवेशों को देश के गौरव का प्रतीक समझते थे। तत्कालीन नेपाल 4 राज्यों यथा काठमाण्डू, पट्टन, भटगंग और गोरखा में बटा था। 1769 में गोरखा शासक पृथ्वीनारायण शाह नें नेपाल के अधिकांश भू–भागों को जीतकर केन्द्रीय प्रशासन की स्थापना कर नेपाल को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँधा। इधर ब्रिटिश भारत का साम्राज्य उत्तर पूर्व में नेपाल की तराई को स्पर्श करने लगा था। ब्रिटिश शासन के बार–बार प्रयास के बावजूद नेपाल में उन्हें अपेक्षित व्यापारिक सफलता न मिलने पर अग्रेज विक्षुब्ध हो उठे और 1804 में लार्ड वेलेजली ने पूर्व में नेपाल से की गयी व्यापारिक संधि को भंग कर दिया। गोरखाओं ने 1814 ई. में अंग्रजों के अधीन बुटवल नामक स्थान के तीन पुलिस स्टेशनों पर आक्रमण कर दिया। परिणाम स्वरुप 1814 ई. में लार्ड हेस्टिंग ने नेपाल के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और अन्ततः 1816 ई. में नेपाल को अंग्रेजों के साथ सुगौली की संधि हुई।

1947 ई. को भारत ब्रिटिश दासता से मुक्त हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की उत्तरी हिमालयी सीमा में शान्ति थी। नेपाल भी स्वतंत्र राष्ट्र के रुप में स्थित था। तिब्बत के साथ उस समय भारत के वाणिज्यिक एवं सामरिक हित जुड़े थे। 31 जुलाई 1950

को भारत तथा नेपाल में 2 महत्वपूर्ण संधियां हुई। इन संधियों नें भारत तथा नेपाल के बीच शांति तथा मैत्रीपूर्ण परिवेश में व्यापार तथा वाणिज्य के फलने–फूलने का अनुकूल अवसर प्रदान किया। 1962 ई. के भारत–चीन युद्ध के समय चीन द्वारा नेपाल पर जब यह दबाव डाला गया कि वह अपने गोरखा मूल के निवासियों को भारतीय सेना में भर्ती होने से रोक दे तब नेपाल ने इसका घोर विरोध किया एवं नेपाली मूल के युवाओं की भारतीय सेना में भर्ती यथावत चलती रही।

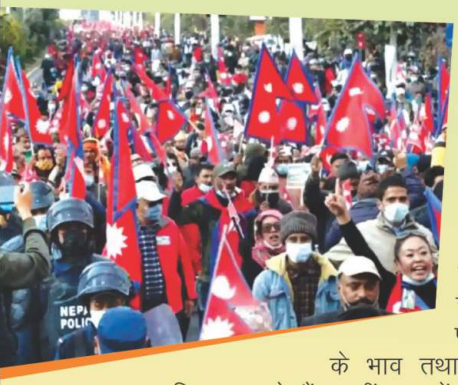

भारत–नेपाल के बीच अटूट सांस्कृतिक सम्बन्धों के बावजूद राजनीतिक स्तर पर कई मुद्दों पर स्वाभाविक मतभेद ठीक उसी प्रकार होते रहते हैं जैसे किसी परिवार में आपसी सदस्यों के बीच होते हैं। इनका समाधान भी दोनों देश पारिवारिक समस्या–समाधान की तर्ज पर करते भी रहते हैं। ऐसे ही वर्तमान समय में भारत और नेपाल के बीच ऐसे अनेक मुद्दे हैं, जिन पर दोनों देश आम सहमति बनाने का प्रयत्न जारी है।

उपरोक्त इन्हीं मुद्दों एवं प्राचीन काल से चलते चले आ रहे भारत–नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्धों के विविध आयामों पर दोनों देशों की ओर से सामन्जस्यता एवं समरसता के भाव तथा सौहार्द्रपूर्ण वातावरण के पुनर्निर्माण हेतु जो सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं, उन्हीं प्रयासों पर एक सकारात्मक परिचर्चा करने हेतु महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर ने 'भारत–नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान' तक विषय पर तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी कराने का निर्णय लिया है। **तीन दिवसीय इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में हम भारत–नेपाल सम्बन्धों के अधोलिखित परिप्रेक्ष्यों पर चर्चा करने जा रहे हैं।**

1. नेपाल का भौगोलिक स्वरूप एवं परिवेश
2. भारत–नेपाल राजनीतिक सम्बन्ध
3. तराई क्षेत्र की सांस्कृतिक समरूपता
4. नेपाल की सांस्कृतिक विकास यात्रा
5. भारत में इस्लामिक युग और नेपाल
6. भारत–नेपाल की साझा संस्कृति
7. भारत–नेपाल साहित्यिक सम्बन्ध
8. नेपाल : राज्य, समाज एवं संस्कृति
9. राणा कालीन नेपाल
10. नेपाल : राजशाही से लोकतंत्र तक
11. भारत–नेपाल सम्बन्ध : भाषाई दृष्टिकोण
12. भारत–नेपाल सम्बन्ध का वर्तमान परिदृश्य
13. भारत की सामरिक सुरक्षा में नेपाल का महत्व
14. नेपाल : एक राष्ट्र के रूप में उद्‌भव और विकास
15. भारत–नेपाल सम्बन्ध : नाथपंथ के विशेष संदर्भ में
16. भारत की स्वतत्रंता के पश्चात भारत–नेपाल सम्बन्ध
17. भारत के ब्रिटिश राज–युग में नेपाल और भारत–नेपाल सम्बन्ध
18. नेपाल में गहराता राजनैतिक संकट : भारतीय सुरक्षा के सम्बन्ध में
19. भारत–नेपाल सम्बन्ध : सभ्यता के उषा काल से 12वीं शताब्दी तक
20. नेपाल के आर्थिक विकास एवं सामरिक सुरक्षा में भारत का योगदान
21. भारत–नेपाल सम्बन्ध : वर्तमान भारत के आन्तरिक सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में

शोध-प्रपत्र

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/आलेख में विषय वस्तु का उद्देश्य, सार–संक्षेप, बीज शब्द, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों की सीमा में ही शोध–प्रपत्र स्वीकृत किये जायेंगे। शोध–पत्र हिन्दी, अंग्रेजी एवं नेपाली भाषा में स्वीकृत होंगे। शोध–पत्र/आलेख लगभग 2500 शब्दों में होना चाहिए तथा 15 जनवरी 2024 तक,

ई–मेल bharatnepalseminar@gmail.com पर पहुँच जाना चाहिए। प्राप्त शोध पत्र/आलेखों का प्रकाशन संगोष्ठी के पूर्व ही हो जायेगा। शोध–पत्र की हार्ड कापी ए–4 आकार के कागज पर कम्पोज होना चाहिए। हिन्दी एवं नेपाली भाषा के शोध–पत्र वॉकमैन चाणक्या प्रारूप में फॉन्ट साइज 14 में तथा अंग्रेजी भाषा के शोध–पत्र टाइम्स न्यू रोमन प्रारूप में फॉन्ट साइज 12 में महाविद्यालय के पते पर भेजें।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क शोधार्थियों हेतु रू. 700/– तथा प्राध्यापकों हेतु रू. 1000/– निर्धारित है। आमंत्रित अतिथियों/विषय–विशेषज्ञों को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं होगी। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में **'प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़'** के नाम से अथवा नकद संगोष्ठी के समय पंजीकरण के दौरान देय अनुमन्य होगा।

यात्रा/आवास/भोजन-व्यवस्था

आमंत्रित अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों को उनके आने–जाने का व्यय आयोजन समिति द्वारा देय होगा। सभी के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क रहेगी किन्तु आने की पूर्व सूचना देना आवश्यक है।

गोरखपुर

गोरखपुर महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के लगभग सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल, सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित हैं। भगवान बुद्ध का गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग 90 किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण–स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन सन्त एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक सन्त कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से 20 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क–मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डू गोरखपुर से 400 किमी. की दूरी पर है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। नगर–क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें गोरखनाथ–मंदिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मंदिर आदि प्रमुख हैं। मार्च माह में गोरखपुर का मौसम आर्द्र रहता है, रात में हल्की ठण्ड पड़ती है। तापमान सामान्य बना रहता है।

संगोष्ठी संयोजक/सचिव

डॉ. पद्मजा सिंह
सहायक आचार्य
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
मो. : 9899787815

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
सहायक आचार्य
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
मो. : 9452971570

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

एवं

कला संकाय

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

को संयुक्त तत्वावधान मा आयोजित

भारत–नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धहरुको विकास यात्रा : अतीत देखि वर्तमान सम्म

विषयक

तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

फाल्गुन कृष्ण पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी, कलियुगाब्ध 5125

विक्रमी संवत् 2080, नेपाली संवत् 1144, तद्नुसार - शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार

दिनांक 1, 2 एवं 3 मार्च 2024 (फाल्गुण 18, 19, 20 गते)

'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धहरुको विकास यात्रा : अतीत देखि वर्तमान सम्म'

पर्वतराज हिमालयको काखमा वसेको प्रभुतासम्पन्न र हिन्दू धर्म एवं संस्कृति प्रति अटूट निष्ठा तथा सद्भाव राखने नेपाल भारतको एकमात्र छिमेकी देश नभएर हाम्रो सांस्कृतिक साझेदारी (अंशभागी) एवं सामरिक (रणनैतिक) सहोदर पनि हो। भारत र नेपाल बीचको सम्बन्ध दुवै देशको साझा सांस्कृतिक सम्पत्तिमा अन्तर्निहीत आदर्श मूल्य एवं सिध्दान्त हरूमाथि आधारित छ। यही साझा संस्कृति, आदर्श, एवं सिध्दान्त दुवै देशका जनता बीचमा आज पनि मित्रता एवं आपसी सद्भावनाका ठोस एवं प्रगाढ़ आधार बनी रहेका छन। भारतीय संस्कृतिको कण–कणमा वसेका देवाधिदेव भगवान शिवको निवास स्थान तथा माता जगदम्बा पार्वती र जगज्जननी देवी सीताको पैतृक घरका रुपमा नेपालको पहिचान सुविदितै छ। सम्पूर्ण नेपाल पग–पगमा हिन्दू देवी–देवता, बौद्ध मठ–मन्दिर, सिद्ध योगीहरु (विशेषतः नाथपंथ योगी) को तपस्थलीहरुले भरिएको छ। वर्तमान भारतीय सीमा संग जोडिएको, पश्चिम देखि पूर्व तर्फ 550 मील लाभो र उत्तर देखि दक्षिण तर्फ 120 मील चौड़ा पाटाको रुपमा उत्तराखण्ड देखि सिक्किम संम नेपालको विस्तार देख्न सकिन्छ।

भारतको नेपाल संग घनिष्ठताको अनुमान यही तथ्य द्वारा लगाउन सकिन्छ कि सनातन भारतीय संस्कृति एवं धर्मले ओत–प्रोत अठारह पुराणहरु मध्ये एक स्कन्द पुराणमा नेपाल माहात्म्य नामक यौटा सम्पूर्ण अध्याय आबद्ध छ। यस अध्यायमा नेंपालका विभिन्न परम्परा, रीति–रीवाज, सामाजिक नियम एवं संस्कारहरूको वर्णन गरिएको छ। जुन पूर्णरुपले प्राचीन हिन्दू संस्कृति संग मेल खान्छ। वैदिक ग्रन्थ अर्थवेदमा पनि नेपालको उल्लेख मिल्नु आपसको साम्यतालाई पुष्टि गर्नु हो। भगवान बुद्धको जन्मस्थान नेपालको लुम्बिनीमा हो भने उनको प्रथम उपदेश हामीले भारतको सारनाथमा प्रसारित भएको देख्द छौं। यसले स्पष्ट हुन्छ कि धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषागत सामनता हरुले जहाँ एक तर्फ दुबै देश बीच स्नेहिल सम्बन्धहरुको जग वसालेको छ भने त्यहीं अर्कोतर्फ भौगोलिक निकटताले उसलाई झन बढ़ी मधुर बनाउनमा योगदान दिएको छ। अतिप्राचीन कालदेखि नै भारत र नेपाल दुवै देशका नागरिक एक अर्काको क्षेत्रमा निर्वाध गतिले आउने जाने गरिरहेका छन्। यो क्रम आजसंम जारी नै छ। आज पनि नेपाल जान कुनै पनि भारतीय नागरिकका लागि अथवा भारत आउन नेपाली कुनै पनि नागरिकका लागी पासपोर्टको आवश्यकता पर्दैन। वस्तुतः आज पनि भारत नेपालका जनमानस एक अर्कामा यसरी घुलमेल खाएका छन् कि बिना कुनै सन्देह हामी भन्न सक्दछैं नेपाल र भारतमा आज पनि रोटी र बेटीको सम्बन्ध कायम नैं छ।

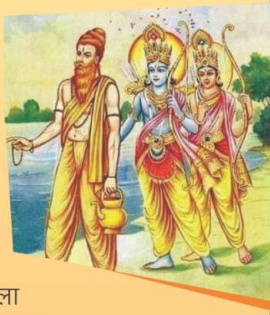

वैदिक उत्तरवैदिक काल झैं महाकाव्य कालमा पनि भारतको नेपाल संग सम्बन्ध विश्व व्यापक छ। माता सीताको गृहनगरी जनकपुरीको पहिचान आज नेपालको जनकपुर धाम द्वारा नै हुन्छ। नेपालका लिच्छवि राजवंशको राजधानी वैशाली थियो। वाल्मीकि रामायणमा उल्लेख मिल्दछ कि मिथिला जांदा रामले गंगाको उत्तरी किनारा मा उभिएर वैशाली लाई देखेका थिए।

''उत्तरं तीरमासाद्य सम्पूज्यार्षिगणं ततः।
गंगा कूले निविष्टास्ते विशालं ददृशुःपुरीम्।।

(वाल्मीकि रामायण–बालकाण्ड 45–9)

छैटौं शताब्दी ई. पूर्व का राजनैतिक घटनाक्रमहरुमा पनि नेपाल र नेपाली लिच्छवि राजवंशको उल्लेख यदा कदा मिली रहन्छ। यी सबै उल्लेख हरु द्वारा तत्कालीन समयमा पनि भारतको नेपाल संग अटूट सम्बन्ध दृष्टिगोचर हुन्छ। जैन धर्मका चौबीसवां तीर्थंकर भगवान महावीर एवं बौद्धधर्म प्रवर्तक गौतम बुद्ध का समकालीन मगध जिल्लाका प्रथम राजवंश हर्यक वंशीय शासक विम्बिसारले लिच्छवि कन्या चेलना संग विवाह गरेका थिए।

गुप्त साम्राज्यका प्रथम स्वतन्त्र शासक चन्द्रगुप्त प्रथमको विवाह नेपालका लिच्छवि राजकुलकी कन्या कुमारदेवी संग भएको थियो। यस तथ्य कुराको जानकारी हामी लाई गुप्त अभिलेख एवं मुद्रा द्वारा हुन्छ। यही वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा भारतीय इतिहासका पराक्रमी र अप्रतिरथ शासक समुद्रगुप्तको जन्म भएको थियो, जसले गुप्त शासनको प्रभाव सम्पूर्ण भारत वर्ष सहित भारतीय भौगोलिक सीमा–हरुको पारी पनि प्रसारित गराए। लिच्छवि संग सम्बन्धित हुनाले समुद्र गुप्त लाई गुप्तलेखमा गर्व पूर्वक लिच्छवि दौहित्र (छोरीको छोरा) भनिएको छ। यतिमात्र न भएर गुप्तहरुले यस वैवाहिक सम्बन्ध को स्मृतिमा चन्द्रगुप्त कुमारदेवी प्रकारको सिक्का पनि चलाएका थिए। लिच्छवि संग वैवाहिक सम्बन्ध भए पछि संभवतः चन्द्रगुप्त प्रथमले पूर्वी उत्तर प्रदेशको प्रयाग र साकेत क्षेत्रहरुमा आफ्नो पराक्रम स्थापित गरेका थिए। यसरी हामीले देख्न सक्द छौं कि गुप्त राजवंशको उत्थान र विकासमा नेपाली लिच्छवि हरुको योगदान महत्वपूर्ण छ।

ब्रिटिशकालमा ब्रिटिश, भारत र नेपालको सम्बन्ध मिश्रित स्वभावको थियो। वास्तवमा 18वीं र 19वीं शदीको समय साम्राज्यवाद र उपनिवेशवादको दौरमा थियो। इंगलैण्डमा यो काल पामर्स्टन र डिजरायली जस्ता साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञहरुको काल थियो जसले उपनिवेशहरु लाई देशको गौरवको प्रतीक मान्दथे। तत्कालीन नेपाल चार राज्य जस्तै– काठमाण्डू, पाटन, भटगंग र गोर्खामा विभाजित थियो। 1869 मा गौर्खाका शासक पृथ्वीनारायण शाहले नेपालको भूभाग विजय हासिल गरी केन्द्रीय प्रशासनको स्थापना गर्दै नेपाल लाई एष्ट्रीय एकताको सूत्रमा बांधे। यता ब्रिटिश भारतको साम्राज्यले उत्तरपूर्वमा नेपालको तराई लाई छुन लागेको थियो। बार–बार प्रयासको फलस्वरूप नेपालमा अपेक्षित व्यापारमा सफलता न मिल्नाले अग्रजहरु विक्षुब्ध मै उठै र 1804 मा लार्ड वैजेजली ले नेपालमा पहिले गरिएको व्यापारिक सन्धि लाई भंग गरिदिए। गोर्खाहरुले 1814 ई. मा अंग्रेजहरुको अधीन बुटवल नामक ठाउँको तीन पुलिस स्टेशन माथि आक्रमण गरिदिए। परिणाम स्वरूप 1814 ई. मा लार्ड हेस्टिंगडग्ले नेपाल विरुद्ध युद्ध घोषण गरिदिए। अन्ततः 1816 ई. मा नेपाललाई अंग्रेज संग सुगौली सन्धि गर्नु पर्यो।

1947 मा भारत ब्रिटिश दासता वाट मुक्त भयो। स्वतन्त्रता प्राप्ति कालमा भारतको उत्तरी हिमालयी सीमा मा शांति थियो। नेपाल पनि स्वतन्त्र राष्ट्रको रुपमा अवस्थित थियो। त्यस समय तिब्बत संग भारतको वाणिज्यिक रणनैतिक (सामरिक) हित जोडिएका थिए। 31 जुलाई 1950 मा भारत तथा

नेपालमा महत्वपूर्ण दुई सन्धि भए। यी सन्धिहरुले भारत र नेपाल बीच शान्ति तथा मैत्रीपूर्ण परिवेशमा व्यापार तथा वाणिज्य लाई फल्न र फूल्न अनुकूल समय प्रदान गरायो। 1962 मा भारत–चीन युद्धको बेला चीन तथा नेपाल माथि जब यो दवाव दिइयो कि उसले आफ्ना गोर्खा मूलका निवासी हरुलाई भारतीय सेनामा भर्ती हुन प्रतिबन्ध लगाओस्। तव नेपाल ले यसको घोर विरोध जतायो, फलतः नेपाली मूलका युवा हरु को भारतीय सेनामा भर्ती यथावत् कायम रह्यो।

भारत–नेपाल बीच अटूट सांस्कृतिक सम्बन्ध रही रहेता पनि राजनीतिक स्तरमा कतिपय विन्दू माथि स्वाभाविक मतभेद ठीक उसै प्रकार भै रहेका हुन्छन् जसरी कुनै परिवारमा आपसी सदस्यहरू बीच हुन्छ। यसको समाधान पनि दुवै देश पारिवारिक समस्या समाधानको दृष्टिले गरी नै रहन्छन्। यसैगरी आज वर्तमान समयमा भारत र नेपाल बीच यस्ता अनेक विषय (मुद्दा) छन् जसमाथि दुवै देशले आम सहमति बनाउने प्रयास गर्दै छ।

उपरोक्त यिनै मुद्दाहरु एवं प्राचीनकालदेखि चल्दै आई रहेका भारत–नेपाल सांस्कृतिक सम्बन्धहरुको छलफल गर्नु पर्ने विविध विन्दुहरु माथि दुवै देशका तर्फ वाट सामंज्यस्यता समरसताको भाव तथा सौहार्दपूर्ण वातावरणको पुर्ननिर्धारण हेतु जुन सार्थक प्रयास गरिदै छ उनै प्रयासहरू माथि एक सकारात्मक परिचर्चा गर्नका लागि महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगलधूसड़ गोरखपुरले ''भारत–नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धहरुको विकास यात्रा : अतीत देखि वर्तमान संम'' विषय माथि तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीय गराउने निर्णय लिएको छ। **तीन दिवसीय यस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमा हामीले भारत नेपाल सम्बन्धहरुका अधोलिखित परिप्रेक्ष्य हरुमा चर्चा–गर्न जादै छौं।**

1. नेपालको भौगोलिक स्वरूप एवं परिवेश
2. भारत नेपालको राजनीतिक सम्बन्ध
3. तराई क्षेत्रको सांस्कृतिक समरूपता
4. नेपालको सांस्कृतिक विकास यात्रा
5. भारतमा इस्लामिक युग र नेपाल
6. भारत नेपालको साझा संस्कृति
7. भारत नेपाल को साहित्यिक सम्बन्ध
8. नेपाल : राज्य, समाज एवं संस्कृति
9. राणाकालीन नेपाल
10. नेपाल : राजशाही देखि लोकतन्त्र संग
11. भारत नेपाल सम्बन्ध : भाषाई दृष्टिकोण
12. भारत नेपाल सम्बन्धको वर्तमान परिदृश्य
13. भारतको रणनैतिक संरक्षणमा नेपालको महत्व
14. नेपाल एक राष्ट्रको रुपमा उद्भव र विकास
15. भारत नेपाल सम्बन्ध : नाथपंथको विशेष संदर्भ मा
16. भारतको स्वतन्त्रता पश्चात् नेपाल भारत सम्बन्ध
17. भारतको ब्रिटिश राज युगमा नेपाल र नेपाल भारत सम्बन्ध
18. नेपालमा गहिरिदों राजनैतिक संकटहरु भारतीय सुरक्षा का सम्बन्धमा
19. भारत नेपाल सम्बन्ध : सभ्यताको उषाकाल देखि 12वीं शताब्दी संम
20. नेपालको आर्थिक विकास एवं रणनैतिक सुरक्षामा भारतको योगदान
21. भारत नेपाल सम्बन्ध : वर्तमान भारत को आन्तरिक सुरक्षाको परिप्रेक्ष्यमा

शोध-पत्र

संगोष्ठीमा प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/अभिलेखमा विषयवस्तुको उद्देश्य, सारसंक्षेप, बीजशब्द, प्रयुक्त विधि तन्त्र एवं निष्कर्षको स्पष्ट उल्लेख हुनु पर्दछ। सूचना प्रपत्रमा निर्दिष्ट विषयहरुको सीमामा नै शोध–प्रपत्र स्वीकृत गरिने छन्। शोध–प्रपत्र हिन्दी, अंग्रेजी एवं नेपाली भाषामा स्वीकृत हुने छन्। शोध–प्रपत्र आलेख लगभग 2500 शब्द हरुमा हुनु पर्नेछ तथा 15 जनवरी 2024 संम ईमेल bharatnepalseminar@gmail.com मा पुग्नु पर्नेछ। प्राप्त शोध–पत्र/अभिलेखको प्रकाशन

संगोष्ठी पूर्व नै हुने छ। शोध–पत्रको हार्ड कापी ए–4 आकार को कागजमा कम्पोज हुनुपर्ने छ। हिन्दी एवं नेपाली भाषाको शोध–पत्र वाकमेन चाणक्या प्रारूपमा फॉन्ट साइज 14 मा तथा अंग्रेजी भाषाको शोध–पत्र टाइम्स न्यू रोमन प्रारूपमा फॉन्ट साइज 12 मा महाविद्यालयको ठेगानामा पठाउनु पर्नेछ।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क शोधार्थी हरुका लागि भा रु. 700/– तथा प्राध्यापकका लागि भा रु. 1000/– निर्धारित छ। आमन्त्रित अतिथिहरु/विषय विशेषज्ञहरुको पंजीयन गराउनु पर्ने आवश्यकता छैन। पंजीयन शुल्क बैंकड्राफ्टको रुपमा प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़ को नाममा अथवा नगद संगोष्ठीको समयमा पंजीकरण को वेलामा देय स्वीकार हुनेछ।

यात्रा/आवास/भोजन व्यवस्था

आमन्त्रित अतिथिहरु र विषयविशेषज्ञ हरु लाई आउने जाने व्यय आयोजन समिति द्वारा देय हुने छ। सवैको लागि आवास र भोजनको व्यवस्था आयोजकहरु द्वारा निशुल्क दिइने छ किन्तु आउनु पूर्व सूचना दिनु आवश्यक छ।

गोरखपुर

गोरखपुर महायोगी गुरुगोरखनाथको तपो भूमि हो। यसनगरको उत्तरपूर्व रेलवेको मुख्यालय हुनुको कारण देशका लगभग सवै शिक्षा केन्द्र/महानगर वाट रेल, सड़क तथा हवाई मार्ग संम पनि जोड़िएको छ। नगरको पार्श्वमा अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित छन्। भगवान बुद्धको गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपदमा स्थित वर्तमान पिपरहवा) यहाँदेखि लगभग 90 किमी.को दूरीमा छ। गोरखपुर नगर देखि भगवान बुद्धको निर्वाण स्थली कुशीनगर 50 कि.मी. को दूरीमा स्थित छ। मध्य युगीन सन्त एवं समाजसुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता का पोषक सन्त कबीरको निर्वाणस्थली मगहर यहाँ देखि 20 कि.मी. को दूरीमा स्थित छ। यहाँ वाट नेपाल सीमाको दूरी लगभग 100 कि.मी.छ। नेपालका दर्शनीय स्थल हरुको भ्रमण को लागि सड़क मार्ग द्वारा सुगमता पूर्वक जान सकिन्छ। काठमाण्डू गोरखपुर देखि 400 कि.मी. को दूरीमा छ। यी सम्पूर्ण स्थल हरुको यात्रा बस या टैक्सी द्वारा सरलता पूर्वक गर्न सकिन्छ। नगर क्षेत्रमा पनि अनेक दर्शनीय स्थल छन् जसमध्ये गोरखनाथ मन्दिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मन्दिर, चिड़िया घर, रामगढ़ताल वाटरपार्क आदि प्रमुख छन्। मार्च महिनामा गोरखपुरको मौसम आद्र रहन्छ। रातमा हल्का जाड़ो हुन्छ। तापमान सामान्य बनी रहन्छ।

संगोष्ठी संयोजक/सचिव

डॉ. पद्मजा सिंह
सहायक आचार्य
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
मो. : 9899787815

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
सहायक आचार्य
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
मो. : 9452971570

परामर्शदात्री समिति

प्रो. नन्दबहादुर सिंह, उप कुलपति, मध्य पश्चिम वि.वि., सुर्खेत, नेपाल
प्रो. के.एन. सिंह, मा. कुलपति, दक्षिण बिहार केन्द्रीय वि.वि. गया, बिहार
प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, मा. कुलपति, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय वि.वि., अमरकंटक, मध्य प्रदेश
प्रो. मुरली मनोहर पाठक, मा. कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि. दिल्ली
प्रो. संजीत गुप्ता, मा. कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर वि.वि., बलिया, उ.प्र.
प्रो. बैद्यनाथ लाभ, मा. कुलपति, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार
प्रो. संजीव शर्मा, मा. कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय वि.वि., चम्पारण, बिहार
डॉ. ए.के. सिंह, मा. कुलपति, महायोगी गुरू गोरखनाथ आयुष वि.वि., गोरखपुर
प्रो. रजनीकान्त पाण्डेय, पूर्व कुलपति, सिद्धार्थ वि.वि., कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर
मा. देवेन्द्र राज कण्डेल, पूर्व गृह राज्य मंत्री, नेपाल
श्री नारायण प्रसाद ढकाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद, काठमाण्डू, नेपाल
प्रो. कीर्ति पाण्डेय, आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि., गोरखपुर
प्रो. राजवन्त राव, आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि., गोरखपुर
प्रो. सुमन जैन, आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, बनारस हिन्दु वि.वि., वाराणसी
प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, आचार्य, संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नेहरू वि.वि., नई दिल्ली
प्रो. मज़हर आसिफ, आचार्य, इतिहास विभाग, जवाहर लाल नेहरू वि.वि., नई दिल्ली
डॉ. के.वी. राजू, आर्थिक सलाहकार, मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र शासन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
प्रो. रूसीराम महानन्दा, आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि., गोरखपुर

विषय विशेषज्ञ

श्रीमती पुष्पा भुसाल, वरिष्ठ अधिवक्ता, पूर्व उप सभा प्रमुख, पूर्व सांसद एवं सदस्य, केन्द्रीय नेपाली कांग्रेस, नेपाल
मा. मीन बहादुर विश्वकर्मा, पूर्व वाणिज्य मंत्री, नेपाल एवं विभाग प्रमुख, केन्द्रीय सूचना, संचार एवं प्रचार विभाग, नेपाल
मा. भीम पराजुली, प्रदेश सदस्य, कोशी प्रदेश तथा केन्द्रीय सदस्य, नेपाली कांग्रेस, नेपाल
मा. बैजनाथ जायसवाल, प्रदेश सदस्य एवं विधायक, लुम्बिनी प्रदेश, नेपाल
प्रो. (डॉ.) भागवत ढकाल, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, प्राचार्य, वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमाण्डू, नेपाल
श्री श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गौतम, लेखक, स्तम्भकार एवं विश्लेषक, काठमाण्डू, नेपाल
प्रो. (डॉ.) राजाराम सुवेदी, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, काठमाण्डू, नेपाल
श्री टंक पौडेल, पूर्व अध्यक्ष, देवघाट क्षेत्र विकास कोष, चितवन, नेपाल
प्रो. हर्ष सिन्हा, आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि., गोरखपुर
प्रो. विनोद सिंह, आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि., गोरखपुर
प्रो. तेज प्रताप सिंह, आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग, बनारस हिन्दु वि.वि., वाराणसी
प्रो. राजशरण शाही, आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर वि.वि., लखनऊ
श्री अजीत कुमार, सामाजिक कार्यकर्ता, जम्मू कश्मीर
डॉ. ओमजी उपाध्याय, निदेशक (शोध एवं प्रशासन) तथा सदस्य सचिव (कार्यवाहक), आई.सी.एच.आर., नई दिल्ली
प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, पूर्व आचार्य, इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि., गोरखपुर
श्री मृत्युन्जय कुमार, वरिष्ठ पत्रकार

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक : **पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज**
मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र. शासन
प्रबन्धक, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर

संरक्षक : **प्रो. उदय प्रताप सिंह**
अध्यक्ष–प्रबन्ध समिति, महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़, गोरखपुर
पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.

डॉ. (मे.जन.) अतुल कुमार बाजपेई
मा. कुलपति, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

प्रो. पूनम टण्डन
मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

अध्यक्ष : **डॉ. प्रदीप कुमार राव**
कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

संयोजक/सचिव : **डॉ. पद्‌मजा सिंह**
सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सह संयोजक : **डॉ. अमित उपाध्याय**, सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अभिषेक सिंह, सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. इक्ष्वाकु प्रताप सिंह
सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सदस्य

डॉ. विजय चौधरी
डॉ. वेंकट रमन पाण्डेय
डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय
श्री विनय कुमार सिंह
श्रीमती शिप्रा सिंह
श्री अभिषेक वर्मा

डॉ. डी.एस. अजीथा
डॉ. विमल कुमार दूबे
डॉ. मंजुनाथ
डॉ. शशिकान्त सिंह
प्रो. सुनील कुमार सिंह
श्री रोहित श्रीवास्तव

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित 2005 ई.

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम, बालापार रोड सोनबरसा, गोरखपुर

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर

आरोग्यधाम, बालापार रोड, सोनबरसा गोरखपुर एवं

कला संकाय

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

भारत-नेपाल सांस्कृतिक अन्तर्सम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक

विषयक

तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

01, 02 एवं 03 मार्च, 2024

संगोष्ठी संक्षिप्तिका

01 मार्च, 2024

कार्यक्रम	समय	स्थान
पंजीकरण	प्रातः 08:30 से	मुख्य द्वार (नियन्ता कार्यालय)*
चाय–जलपान	प्रातः 08.30 से 09:30 बजे	विज्ञान भवन के पीछे
उद्घाटन	प्रातः 10.00 से 12.00 बजे	श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)
भोजन	अपराह्न 12.30 से 01.30 बजे	विज्ञान भवन के पीछे
प्रथम तकनीकी सत्र	अपराह्न 02.00 से 04.00 बजे	श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)
द्वितीय तकनीकी सत्र	अपराह्न 02.00 से 04.00 बजे	माता सीता सभागार (प्रथम तल)
स्वल्पाहार	सायं 0400 से 04.30 बजे	विज्ञान भवन के पीछे

02 मार्च, 2024

तृतीय तकनीकी सत्र	प्रातः 10:00 से 12:00 बजे	श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)
चतुर्थ तकनीकी सत्र	प्रातः 10:00 से 12:00 बजे	माता सीता सभागार (प्रथम तल)
भोजन	अपराह्न 12.30 से 01.30 बजे	विज्ञान भवन के पीछे
पंचम तकनीकी सत्र	अपराह्न 02.00 से 03.30 बजे	श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)
स्वल्पाहार	सायं 03.30 से 04.00 बजे	विज्ञान भवन के पीछे
गोरखनाथ मंदिर भ्रमण	सायं 04.30 से 07.00 बजे	

03 मार्च, 2024

समूह परिचर्चा सत्र	प्रातः 10:00 से 12:00 बजे	श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)
भोजन	अपराह्न 12.30 से 01.30 बजे	विज्ञान भवन के पीछे
समारोप	अपराह्न 02.00 से 04.00 बजे	श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)
स्वल्पाहार	सायं 04.00 से 04.30 बजे	विज्ञान भवन के पीछे

*सत्र एवं अन्य कार्यक्रमों के दौरान पंजीकरण स्थगित रहेगा।

दिनांक : 01.03.2024

सत्र / समय	मंचस्थ अतिथि / शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता	कार्यक्रम	
उद्घाटन सत्र (01.03.2024) प्रातः 10:00–12:00 **स्थान** **श्रीराम सभागार** **(द्वितीय तल)**	**अध्यक्ष** **प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य, माननीय कुलपति** लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल **सारस्वत अतिथि** **प्रो. नन्द बहादुर सिंह, माननीय उपकुलपति** उत्तर पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल **मुख्य अतिथि** **मा. देवेन्द्र राज कण्डेल, पूर्व गृह राज्यमंत्री** नेपाल सरकार, काठमाण्डू, नेपाल **बीज–वक्तव्य** **प्रो.हर्ष कुमार सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य** **रक्षा अध्ययन विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **विशिष्ट अतिथि** **श्रीमती पुष्पा भुषाल, पूर्व उप सभामुख प्रतिनिधि सभा** एवं केन्द्रीय सदस्य, नेपाली कांग्रेस, नेपाल **प्रो.(डॉ.) भागवत ढकाल, प्राचार्य** विद्यापीठ काठमाण्डू, नेपाल **प्रस्ताविकी एवं स्वागत** **डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **संचालन** **डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, संगोष्ठी संयोजक** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर	मंच आमंत्रण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि	10.00
		सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत	10.00–10.02
		अतिथि परिचय एवं स्वागत	10.02–10.04
		स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान *(प्राचार्य द्वारा)*	10.04–10.05
		कुलगीत	10.05–10.07
		पुस्तक विमोचन *(संगोष्ठी पूर्वकार्यवृत्त)*	10.07–10.08
		कार्यक्रम प्रस्ताविकी एवं स्वागत उद्बोधन	10.08–10.13
		बीज वक्तव्य	10.13–10.28
		संकल्पगीत *(शत्–शत् नमन .....)*	10.28–10.30
		उद्बोधन *(प्रो. भागवत ढकाल जी)*	10.30–10.45
		उद्बोधन *(श्रीमती पुष्पा भुषाल जी)*	10.45–11.00
		उद्बोधन *(प्रो. नन्द बहादुर सिंह जी)*	11.00–11.20
		महाविद्यालय बोधगीत *(निर्माणों के पावन .....)*	11.20–11.22
		उद्बोधन *(मा. देवेन्द्र राज कण्डेल जी)*	11.22–11.37
		अध्यक्षीय उद्बोधन	11.37–11.57
		वन्देमातरम्	11.57–12.00
प्रथम तकनीकी सत्र (01.03.2024) अपराह्न 02:00–04:00 **स्थान** **श्रीराम सभागार** **(द्वितीय तल)**	**अध्यक्ष** **प्रो.हर्ष कुमार सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य** **रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **विषय विशेषज्ञ** **मा. देवेन्द्र राज कण्डेल** पूर्व गृह राज्यमंत्री, नेपाल सरकार, काठमाण्डू, नेपाल **श्रीमती पुष्पा भुषाल, पूर्व उप सभामुख प्रतिनिधि सभा** एवं केन्द्रीय सदस्य, नेपाली कांग्रेस, नेपाल **माननीय भीम पराजुली, विधायक, कोसी प्रदेश** एवं केन्द्रीय सदस्य, नेपाल **श्री कृष्ण अनिरूद्ध गौतम, पूर्व सलाहकार** प्रधानमंत्री, नेपाल **संचालन** **डॉ. अवन्तिका पाठक, सहायक आचार्य, गृहविज्ञान विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **प्रतिवेदन** **डॉ. वेंकट रमन, अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर	मंच आमंत्रण	02.00
		अतिथि परिचय एवं स्वागत	02.00–02.03
		स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान	02.03–02.05
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, मा. देवेन्द्र राज कण्डेल जी)	02.05–02.20
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, श्रीमती पुष्पा भुषाल जी)	02.20–02.35
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, मा. भीम पराजुली जी)	02.35–02.50
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, प्रो. नरेन्द्र कुमार श्रेष्ठ जी)	02.50–03.05
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, श्री सागर न्यौपाने जी)	03.05–03.20
		अध्यक्षीय उद्बोधन	03.20–04.00
द्वितीय तकनीकी सत्र (01.03.2024) अपराह्न 02:00–04:00 **स्थान** **माँ सीता सभागार** **(प्रथम तल)**	**अध्यक्ष** **प्रो.कीर्ति पाण्डेय, संकायाध्यक्ष, कला संकाय** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **सह अध्यक्ष** **प्रो. भागवत ढकाल, प्राचार्य** वाल्मिकी विद्यापीठ काठमांडू नेपाल **विषय विशेषज्ञ** **प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, से.नि. आचार्य, इतिहास विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **डॉ. शिवाकान्त दूबे, सहायक आचार्य** लुम्बिनी विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल **डॉ. प्रीति त्रिपाठी, सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग** चन्द्रकांती रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर **संचालन** **डॉ. अर्चना गुप्ता, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **प्रतिवेदन** **श्रीमती पुष्पा निषाद, सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता** 1. **सुश्री जूनी श्रीवास्तव** शोध छात्र, राजनीतिशास्त्र विभाग दी.द.उ.गो.विवि., गोरखपुर 2. **श्री विवेक विश्वकर्मा, सहायक आचार्य** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर 3. **डॉ. मनीषा सिंह, प्राचार्य** शिव दुलारी देवी दलदप्त शाही महिला महाविद्यालय, कुशीनगर	मंच आमंत्रण	02.00
		अतिथि परिचय एवं स्वागत	02.00–02.02
		स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान	02.02–02.03
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव जी)	02.03–02.18
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, डॉ. शिवाकान्त दूबे जी)	02.18–02.33
		उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, डॉ. प्रीति त्रिपाठी जी)	02.18–02.48
		शोध पत्र वाचन	02.48–03.03
		उद्बोधन (प्रो. भागवत ढकाल)	03.03–03.28
		अध्यक्षीय उद्बोधन	03.28–04.00

दिनांक : 02.03.2024

सत्र / समय	मंचस्थ अतिथि / शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता	कार्यक्रम
तृतीय तकनीकी सत्र (02.03.2024) प्रातः 10:00–12:00 **स्थान** श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)	**अध्यक्ष** **प्रो.सुधन पौडेल, कार्यकारी निदेशक** नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, नेपाल **सह अध्यक्ष** **प्रो. राजाराम सुवेदी, से.नि आचार्य** त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, काठमाण्डू, नेपाल **विषय विशेषज्ञ** **श्री नवीन बंधु पहाड़ी** प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता नेपाल **विषय विशेषज्ञ** **डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग** गणेश राय पी.जी. कॉलेज डोभी, जौनपुर **संचालन** **डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय, अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **प्रतिवेदन** **श्री अनूप पाण्डेय, अध्यक्ष इतिहास विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता** 1. **डॉ. सुनील कुमार, शोध अध्येता** महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ 2. **डॉ. कुँवर रणंजय सिंह, शोध अध्येता** महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ 3. **डॉ. संदीप श्रीवास्तव, सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर 4. **श्री अजीत कुमार, शोध छात्र, इतिहास विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	मंच आमंत्रण 10.00 अतिथि परिचय एवं स्वागत 10.00–10.02 स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान 10.02–10.03 उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, श्री नवीन बंधु पहाड़ी) 10.03–10.18 उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, डॉ. प्रवीण त्रिपाठी) 10.18–10.33 शोध पत्र वाचन 1. डॉ. सुनील कुमार 10.33–10.38 2. डॉ. कुँवर रणंजय सिंह 10.38–10.43 3. डॉ. संदीप श्रीवास्तव 10.43–10.48 4. श्री अजीत कुमार 10.48–10.53 उद्बोधन (सह अध्यक्ष) 10.53–11.15 अध्यक्षीय उद्बोधन 11.15–12.00
चतुर्थ तकनीकी सत्र (02.03.2024) प्रातः 10:00–12:00 **स्थान** माँ सीता सभागार (प्रथम तल)	**अध्यक्ष** **प्रो.राजवन्त राव, पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य,** **प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **सह अध्यक्ष** **प्रो.(डॉ.) भागवत ढकाल, प्राचार्य** विद्यापीठ काठमाण्डू, नेपाल **विषय विशेषज्ञ** **डॉ. पद्मजा सिंह,** **सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **डॉ. विनोद कुमार, सहायक आचार्य** **सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **संचालन** **डॉ. इक्ष्वाकु प्रताप सिंह,** **सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **प्रतिवेदन** **श्री रमाकान्त दूबे, अध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता** 1.**डॉ. धर्मेन्द्र मौर्य, सहायक आचार्य** **प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** शान्ती सशक्तिकरण महाविद्यालय, सिधुवापार, बडहलगंज, गोरखपुर 2.**सुश्री पूजा, शोध छात्रा** **प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	मंच आमंत्रण 10.00 अतिथि परिचय एवं स्वागत 10.00–10.02 स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान 10.02–10.03 उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, डॉ. पद्मजा सिंह) 10.03–10.18 उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, डॉ. विनोद कुमार) 10.18–10.33 शोध पत्र वाचन 1. डॉ. विनोद कुमार 10.33–10.39 2. डॉ. धमेन्द्र मौर्य 10.39–10.44 3. सुश्री पूजा 10.44–10.50 उद्बोधन (सह अध्यक्ष) 10.50–11.15 अध्यक्षीय उद्बोधन 11.15–12.00
पंचम तकनीकी सत्र (02.03.2024) अपराह्न 02:00–03:30 **स्थान** श्रीराम सभागार (द्वितीय तल)	**अध्यक्ष** **प्रो. सुबोध शुक्ला, आचार्य, संस्कृत विभाग** त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू, नेपाल **सह अध्यक्ष** **डॉ. कुशलनाथ मिश्र, उपनिदेशक** महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ, गोरखपुर **विषय विशेषज्ञ** **श्री प्रकाश प्रियदर्शी, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **विषय विशेषज्ञ** **डॉ. सोनल सिंह, सहायक निदेशक** महायोगी गुरू श्रीगोरक्षनाथ शोध पीठ, गोरखपुर **संचालन** **श्री विनय कुमार सिंह, सहायक आचार्य** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **प्रतिवेदन** **श्री नन्दन शर्मा, अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता** 1.**सुश्री विभा कुमारी, शोध छात्रा, राजनीतिशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 2.**श्री मयंक, शोध छात्र, राजनीतिशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 3.**श्री प्रवीण, शोध छात्र, राजनीतिशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 4.**सुश्री नम्रता कुमारी चौबे, शोध छात्रा, राजनीतिशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर 5.**डॉ.वन्दना सोनकर, सहायक आचार्य, वाणिज्य विभाग** बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	मंच आमंत्रण 02.00 अतिथि परिचय एवं स्वागत 02.00–02.02 स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान 02.02–02.03 उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, श्री प्रकाश प्रियदर्शी) 02.03–02.18 उद्बोधन (विषय विशेषज्ञ, डॉ. सोनल सिंह) 02.18–02.33 शोध पत्र वाचन 1. सुश्री विभा कुमारी 02.33–02.37 2. श्री मयंक 02.37–02.41 3. श्री प्रवीण 02.41–02.45 4. सुश्री नम्रता कुमारी चौबे 02.45–02.49 5. डॉ.वन्दना सोनकर 02.49–02.53 उद्बोधन (सह अध्यक्ष) 02.53–03.08 अध्यक्षीय उद्बोधन 03.08–03.30

दिनांक : 03.03.2024

सत्र / समय	मंचस्थ अतिथि / शोध पत्र प्रस्तुतकर्त्ता	कार्यक्रम
समूह परिचर्चा सत्र (03.03.2024) प्रातः 10:00–12:00 **स्थान** **श्रीराम सभागार** **(द्वितीय तल)**	**प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, माननीय कुलपति** इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश **प्रो.हर्ष कुमार सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य,** रक्षा अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, से.नि. आचार्य, इतिहास विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **प्रो.(डॉ.) सुधन कुमार पौडेल, कार्यकारी निदेशक** नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, बेलझुण्डी, दांङ, नेपाल **डॉ. सुबोध शुक्ला, आचार्य संस्कृत विभाग** त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू, नेपाल **श्री नारायण प्रसाद ढकाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री** प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद्, काठमाण्डू, नेपाल **डॉ. अमित कुमार उपाध्याय, सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **डॉ. पद्मजा सिंह, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग** गणेश राय पी.जी. कॉलेज डोभी, जौनपुर	**परिचय एवं स्वागत** 10.00–10.05 **प्रश्नोत्तरी एवं परिचर्चा** 10.05–12.00
समापन (03.03.2024) अपराह्नः 02:00 बजे से **स्थान** **श्रीराम सभागार** **(द्वितीय तल)**	**अध्यक्ष** **प्रो. पूनम टण्डन, माननीय कुलपति** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **मुख्य अतिथि** **प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, माननीय कुलपति** इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश **विशिष्ट अतिथि** **प्रो.(डॉ.) सुधन कुमार पौडेल, कार्यकारी निदेशक** नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, बेलझुण्डी, दांङ, नेपाल **विशिष्ट अतिथि** **डॉ. सुबोध शुक्ला, आचार्य संस्कृत विभाग** त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू, नेपाल **विशिष्ट अतिथि** **श्री नारायण प्रसाद ढकाल, राष्ट्रीय संगठन मंत्री** प्राज्ञिक विद्यार्थी परिषद्, काठमाण्डू, नेपाल **स्वागत एवं आभार** **डॉ. प्रदीप कुमार राव, प्राचार्य** महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर **संगोष्ठी प्रतिवेदक** **डॉ. अमित कुमार उपाध्याय, सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर **संचालन** **डॉ. पद्मजा सिंह, सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	मंच आमंत्रण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि 02.00 सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत 02.00–02.02 अतिथि परिचय एवं स्वागत 02.02–02.04 स्मृति चिह्न द्वारा अतिथियों का सम्मान *(प्राचार्य द्वारा)* 02.04–02.06 स्वागत उद्बोधन एवं आभार *(प्राचार्य द्वारा)* 02.06–02.15 संगोष्ठी प्रतिवेदन *(प्रतिवेदक द्वारा)* 02.15–02.20 संकल्पगीत *(शत्–शत् नमन .....)* 02.20–02.23 उद्बोधन *(प्रो. सुधन कुमार पौडेल जी)* 02.23–02.38 उद्बोधन *(डॉ. सुबोध शुक्ला जी)* 02.38–02.53 उद्बोधन *(डॉ. नारायण प्रसाद ढकाल जी)* 02.53–03.08 महाविद्यालय बोधगीत *(निर्माणों के पावन युग में .....)* 03.08–03.10 उद्बोधन *(मुख्य अतिथि)* 03.10–03.30 अध्यक्षीय उद्बोधन 03.30–03.57 वन्दे मातरम् 03.57–04.00

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित 2005 ई.

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम, बालापार रोड सोनबरसा, गोरखपुर

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

भारत–नेपाल मैत्री एवं सहयोग का गोरखपुर घोषणा पत्र

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'भारत नेपाल सांस्कृतिक अर्न्तसम्बन्धों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में दोनों देशों के अकादमिक विशेषज्ञों, राजनेताओं, विभिन्न संस्थानों एवं संगठनों के प्रतिनिधियों ने सम्यक विचार विमर्श किया। इस विमर्श से प्राप्त निष्कर्षों को आपसी सहमति के एक घोषणा के रूप में पारित करने का प्रस्ताव किया जाता है।

इस घोषणा पत्र जिसे हम गोरखपुर घोषणा (Gorkhpur Declaration) कहेंगे, उसके मुख्य संकल्प बिन्दु निम्नवत हैं।

1. हम सभी इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि भारत–नेपाल सम्बन्धों की मूल प्राणवायु दोनों देशों के मध्य सदियों पुराने धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सम्बन्ध हैं।

2. हमारा मानना है कि दोनों देशों के इस विशिष्ट सम्बन्ध को बनाये रखने के लिए दोनों देशों के नागरिकों, बौद्धिकों, राजनेताओं एवं युवाओं को इन सांस्कृतिक सम्बन्धों को पुर्नजीवित करने तथा निरंतर प्रतिष्ठित करते रहने का कार्य करते रहना होगा।

3. हम सभी निश्चय करते हैं कि दोनों देशों के नागरिकों विशेष रूप से शैक्षणिक क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों और संगठनों को नियमित रूप से ऐसे संवाद और विमर्श कार्यक्रमों का आयोजन बारी–बारी से दोनों देशों में करते रहना चाहिए जिससे सम्बन्धों का आधार और अधिक विस्तृत और सुगम हो सके।

4. हम यह भी निश्चय करते हैं कि भविष्य में दोनो देशों के सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने के लिए हम नियमित रूप से प्रस्ताव एवं कार्ययोजनायें तैयार करते हुए दोनों देशों के नीति निर्धारकों के समक्ष 'जनाकांक्षाओं के प्रस्ताव' के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

हिन्दुस्तान गोरखपुर, शनिवार, 2 मार्च 2024 05

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में सांस्कृतिक अंतर्संबंधों पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का हुआ शुभारंभ

राम, बुद्ध व गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के सूत्र

गोरखपुर, निज संवाददाता। भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों देशों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के अक्षुण्ण मूल सूत्र हैं। यह कहना है नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल का।

देवेंद्र राज कंडेल शुक्रवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा: अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस सेमिनार में कंडेल ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए राजनीति छोड़ने भी पड़े तो छोड़ना चाहिए। 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद श्रीरामलला की जन्मभूमि अयोध्या में बने भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई तो उसे नेपाल में भी पर्व के

स्मारिका का विमोचन करते देवेन्द्र राज कंडेल, प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य व अन्य।

रूप में मनाया गया। भगवान श्रीराम व माता सीता के चलते भारत नेपाल के आवागमन की परंपरा आज तक चली आ रही है। आज भी बिना पासपोर्ट और वीजा के लोग भारत और नेपाल की सीमाओं को पार करते हैं। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है। उन्होंने नेपाल पर गुरु गोरखनाथ के प्रभाव की चर्चा करते हुए बताया कि नाथ संप्रदाय के नेपाल में कई जगह-जगह भव्य मंदिर हैं। साथ ही कहा कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से हम लोगों की वार्ता हुई है, जल्द ही गोरखपुर से नेपाल के लिए भी पर्यटक बसें चलाई जाएंगी।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों देशों में अन्योन्याश्रित संबंध हैं। हिंदुत्व का सम्मान करने व हिंदुत्व को बढ़ावा देने से निश्चित रूप में नेपाल और भारत के संबंधों में धनिष्ठता और मधुरता आएगी।

एमपीपीजी कॉलेज, जंगल धूषड़ में अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में मौजूद अतिथि व छात्र-छात्राएं।

सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल का डीएनए एक है। इसलिए दोनों के आपसी संबंध प्रगाढ़ हैं।

कार्यक्रम में ये लोग रहे मौजूद : इस अवसर पर आयोजन के संयोजकद्वय डॉ. पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. रामवन्त गुप्ता, डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. हर्षवर्धन, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेंद्र उपाध्याय, डॉ. नीरज सिंह, डॉ. नीलांबुज, नेपाल से आए विद्वतजन प्रो. नरेंद्र कुमार श्रेष्ठ, डॉ. सागर न्यौपाने, भीम पराजुली, प्रो. सुधन कुमार पौडेल, प्रो. राजराम सुवेदी, श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गौतम, प्रो. सुबोध शुक्ला, नारायण प्रसाद ढकाल, राजन कार्की, बाजिरा, बाल बहादुर पांडेय, डॉ. शिवकांत दूबे, कृष्ण हुमागाई, सुभेन्द्र यादव व विनय मिश्र समेत दोनों देशों के प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हमारे संकल्प में भी भारत का जिक्र : प्रो. ढकाल

उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि हमारे संकल्प में भी भारत का जिक्र है। विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुपाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से दोनों देशों में समरसता बढ़ेगी। बीज वक्तव्य देते हुए डीडीयू के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि नेपाल में जो नेपाली मुद्रा में गुरु गोरखनाथ का सम्मान है वह भी कहीं न कहीं नेपाल और भारत की मधुरता [illegible] है। महाराणा प्रताप म[illegible] प्राचार्य डॉ. प्रदीप [illegible] आगंतुकों का स्वा[illegible] कि भारत और ने[illegible] मूल एक है। गोरख[illegible] से जो रिश्ता है उ[illegible] कार्यक्रम का शुभा[illegible] दीप प्रज्वलन कर [illegible] अतिथियों ने भारत [illegible] अंतर्संबंधों पर आ[illegible] विमोचन भी किया।

गोरखपुर। शनिवार ● 2 मार्च ● 2024 '7' राष्ट्रीय सहारा

राम, बुद्ध और गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सू[illegible]

गोरखपुर(एसएनबी)। भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों देशों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के अक्षुण्ण मूल सूत्र हैं।

यह कहना है नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल का। श्री कंडेल शुक्रवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगलधूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा: अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में हो रहे इस सेमिनार में श्री कंडेल ने कहा कि भगवान श्रीराम व माता सीता के चलते भारत नेपाल के आवागमन की परंपरा आज तक चली आ रही है। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है।

- **भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों पर त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ**
- **दोनों देशों में अन्योन्याश्रित संबंध : प्रो.सुबरन लाल**
- **दोनों देश के नागरिकों का डीएनए एक : प्रो.नंद बहादुर**

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों देशों में अन्योन्याश्रित संबंध हैं। वास्तव में सांस्कृतिक आयाम ही हमारे लिए सबसे शक्तिशाली हथियार है। मध्य पश्चिम विवि सुर्खेत नेपाल के उप कुलपति प्रो.नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल का डीएनए एक है इसलिए दोनों के आपसी संबंध प्रगाढ़ हैं। उन्होंने कहा कि नेपाल के बार्डर से नकली पैसों का आना जाना बंद होना चाहिए। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि हमारे संकल्प में भी भारत का जिक्र है। हमारे पठन-पाठन की सामग्री, साहित्य, हमारी सोच, हमारी जीवन शैली सब एक समान है। विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुपाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से दोनों देशों में समरसता बढ़ेगी।

डीडीयू विवि के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो.हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि भारत नेपाल संबंधों में लुंबिनी से बोध गया तक आता है। नेपाल में जो नेपाली मुद्रा में गुरु गोरखनाथ का सम्मान है वह भी कहीं न कहीं नेपाल और भारत की मधुरता को दर्शाता है। महाराणा प्रताप मवि के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने स्वागत करते हुए कहा कि 2014 के बाद भारत बदला है जिससे नेपाल और भारत के संबंध में और भी मधुरता आई है। अतिथियों ने भारत नेपाल के अंतर्संबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया। इस अवसर पर आयोजन के संयोजकद्वय डॉ.पद्मजा सिंह और डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डॉ.सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. रामवन्त गुप्ता, नेपाल से आए विद्वतजन सहित दोनों देशों के प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों पर त्रिदिवीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में उपस्[illegible]

भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा : अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के पहले दिन के तक[illegible] भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति [illegible] हुई। एक सत्र में लुंबिनी विवि के डॉ. शिवकांत [illegible] भारत और नेपाल के लोग एक- दूसरो के दि[illegible] डॉ. प्रीति त्रिपाठी ने कहा कि दोनों ही देश बुद्ध [illegible] बढ़ावा देते हैं। एक अन्य सत्र में वाल्मीकि विद्[illegible] नेपाल के भागवत ढकाल ने कहा कि दोनों देशों [illegible] गतिविधियों को विकसित करने के लिए दोनों दे[illegible] व राजनीतिक दलों को एकजुट होकर एक [illegible] निभाना चाहिए। प्रो. कीर्ति पांडेय ने कहा कि [illegible] दूसरे के निर्भरता का भी निर्वहन करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

www.jagran.com

राम, बुद्ध और गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र : कंडेल

महाराणा प्रताप पीजी कालेज में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ, भारत और नेपाल के सांस्कृतिक अंतरसंबंधों पर हुआ विस्तृत मंथन

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों देशों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र हैं। यह कहना है कि नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल का। वह महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ में शुक्रवार को 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतर्संबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

महाराणा प्रताप पीजी कालेज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि उपस्थित प्रबुद्धजन ● सौ. कालेज प्रशासन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महाराणा प्रताप पीजी. कालेज जंगल धूसड़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में कंडेल ने आगे कहा कि हमें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए राजनीति छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए। अयोध्या में जन्मभूमि पर रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद श्रीरामलला की जन्मभूमि अयोध्या में बने भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई तो उसे नेपाल में भी पर्व के रूप में मनाया गया। भगवान श्रीराम व माता सीता के चलते भारत व नेपाल के बीच आवागमन की परंपरा आज तक चली आ रही है। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है। नेपाल पर गुरु गोरखनाथ के प्रभाव की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि नाथ संप्रदाय के नेपाल में कई जगह-जगह भव्य मंदिर हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से वार्ता हुई है, जल्द ही गोरखपुर से नेपाल के लिए भी पर्यटक बसें चलाई जाएंगी। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुम्बिनी के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों देशों में अन्योन्याश्रय संबंध हैं। दोनों के सह-अस्तित्व से यह संबंध ऊंचाई को प्राप्त करते हैं। इस पारस्परिक संबंध का आधार हिंदुत्व है। हिंदुत्व का सम्मान करने व हिंदुत्व को बढ़ावा देने से निश्चित रूप में नेपाल और भारत के संबंधों में घनिष्ठता और मधुरता आएगी। उन्होंने राजनीतिक कारणों से एक दूसरे के लिए उग्र न होने की अपील की। सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल का डीएनए एक है इसलिए दोनों के आपसी संबंध प्रगाढ़ हैं। इसके पीछे का कारण दोनों देशों की धर्म, संस्कृति, भाषा व सभ्यता का एक होना है। वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि भारत-नेपाल की सोच और जीवन शैली एक समान है।कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुषाल और प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने भी संबोधित किया। अतिथियों का स्वागत कालेज के प्राचार्य डा. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि 2014 के बाद भारत बदला है, जिससे नेपाल और भारत के संबंध में और भी मधुरता आई है। उन्होंने ऐसी गोष्ठी का आयोजन हर वर्ष किए जाने पर बल दिया। इस दौरान भारत नेपाल के अंतरसंबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर डा. पद्मजा सिंह, डा. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डा. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डा. रामवन्त गुप्ता, डा. अमित उपाध्याय आदि मौजूद रहे।

भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पहले दिन तकनीकी सत्रों में भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर विशद चर्चा हुई। एक सत्र में लुंबिनी विश्वविद्यालय के डा. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत और नेपाल के लोग एक-दूसरों के दिलों में बसते हैं। सीआरडीपीजी कालेज गोरखपुर की डा. प्रीति त्रिपाठी ने कहा कि दोनों ही देश पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। प्रो. कीर्ति पांडेय ने कहा कि दोनों देश एक दूसरे के निर्भरता का भी निर्वहन करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

श्रीराम, बुद्ध और गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र : कंडेल

एमपीपीजी कॉलेज में भारत-नेपाल के सांस्कृतिक अंतरसंबंधों पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। भारत और नेपाल की एकता का मूल आधार दोनों की साझा अध्यात्म-संस्कृति है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, महात्मा बुद्ध और शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ भारत-नेपाल एकता के मूल सूत्र हैं।

ये बातें नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहीं। वह शुक्रवार को महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

पूर्व गृह राज्यमंत्री ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति और धर्म के लिए राजनीति छोड़नी भी पड़े, तो छोड़ देना चाहिए। 500 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद अयोध्या में श्रीरामलला की भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हुई तो उसे नेपाल में भी पर्व के रूप में मनाया गया। आज भी बिना पासपोर्ट और वीजा के लोग भारत और नेपाल की सीमाओं को पार करते हैं। यह हमारे आपसी मजबूत संबंधों को दर्शाता है।

एमपी महाविद्यालय जंगल धूसड़ में शुक्रवार को आयोजित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित करते नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल। इस दौरान प्रो.सुबरन लाल बज्राचार्य, प्रो. भागवत ढकाल, प्रो.नंद बहादी, पुष्पा भुषाल, प्रो.हर्ष सिन्हा आदि मौजूद रहे। संवाद

उन्होंने बताया कि नाथ संप्रदाय के नेपाल में कई जगह-जगह भव्य मंदिर हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से हम लोगों की वार्ता हुई है, जल्द ही गोरखपुर से नेपाल के लिए भी पर्यटक बसें चलाई जाएंगी।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए लुंबिनी बौद्ध विश्वविद्यालय, लुंबिनी, नेपाल के कुलपति प्रो. सुबरन लाल बज्राचार्य ने कहा कि भारत और नेपाल के पारस्परिक संबंध का आधार हिंदुत्व है। हिंदुत्व का सम्मान करने और हिंदुत्व को बढ़ावा देने से निश्चित रूप में नेपाल और भारत के संबंधों में घनिष्ठता और मधुरता आएगी।

उन्होंने कहा कि भारत-नेपाल के बीच खुली सीमा हमारे मजबूत संबंधों को दर्शाती है। भारत और नेपाल में कई जातीय समूह भी शामिल हैं। राजनीतिक कारणों से एक दूसरे के लिए उग्र होना बंद करना होगा।

विशिष्ट अतिथि वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू, नेपाल के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि राम त्रेता युग के थे, वाल्मीकि भी त्रेता युग के हैं। नेपाल के लोग वाल्मीकि की जन्मस्थली नेपाल ही मानते हैं। हमारे देवता एक हैं, हमारे ग्रंथ हैं। विशिष्ट अतिथि पुष्पा भुषाल ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से दोनों देशों में समरसता बढ़ेगी। इस पर नेपाल सरकार ने अपने कदम आगे बढ़ाएं हैं।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि भारत नेपाल संबंधों में लुंबिनी से बोध गया तक आता है। नेपाल में जो नेपाली मुद्रा में गुरु गोरखनाथ का सम्मान है वह भी कहीं न कहीं नेपाल और भारत की मधुरता को दर्शाता है।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने आगतों का स्वागत करते हुए कहा कि भारत और नेपाल दोनों देशों का मूल एक है। गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ से जो रिश्ता है, उससे हम भाई हुए। 2014 के बाद भारत बदला है, जिससे नेपाल और भारत के संबंध में और भी मधुरता आई है। मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति प्रो. नंद बहादुर सिंह ने भी विचार रखे। अतिथियों ने भारत नेपाल के अंतरसंबंधों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर डॉ. पद्मजा सिंह, डॉ. सुबोध कुमार मिश्र, प्रो. कीर्ति पांडेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. रामवत गुप्ता, डॉ. अमित उपाध्याय, डॉ. हर्षवर्धन, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेंद्र उपाध्याय, डॉ. नीरज सिंह आदि मौजूद रहे।

तकनीकी सत्रों में हुई भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा

गोरखपुर। तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के पहले दिन के तकनीकी सत्रों में भारत-नेपाल की साझी विरासत और संस्कृति पर चर्चा हुई। एक सत्र में लुंबिनी विश्वविद्यालय के डॉ. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत और नेपाल के लोग एक- दूसरों के दिलों में बसते हैं। हिंदी का जो सम्मान भारत में है, वही नेपाल में है। सीआरडीपीजी कॉलेज गोरखपुर की डॉ. प्रीति त्रिपाठी ने कहा कि दोनों ही देश बुद्ध के पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। एक अन्य सत्र में वाल्मीकि विद्यापीठ काठमांडू, नेपाल के भागवत ढकाल ने कहा कि दोनों देशों के व्यावहारिक गतिविधियों को विकसित करने के लिए दोनों देशों के शासनिक व राजनीतिक दलों को एकजुट होकर एक दूसरे का साथ निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने नेपाल के कई विश्वविद्यालयों से एमओयू साइन किया है जिससे दोनों देशों की शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। संवाद

Scanned with OKEN Scanner

दैनिक जागरण 4
गोरखपुर, 3 मार्च, 2024
www.jagran.com

सीमा से परे है भारत-नेपाल का सांस्कृतिक संबंध : प्रो. भागवत ढकाल

महाराणा प्रताप महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का दूसरा दिन, गुरु गोरखनाथ और नेपाल के गहरे संबंध पर विद्वानों ने की चर्चा

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडू के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने कहा कि भारत और नेपाल भौगोलिक रूप से भले ही सीमाओं में बंटे हैं लेकिन दोनों देश के बीच सांस्कृतिक संबंध सीमाओं से परे हैं। दोनों के आध्यात्मिक दर्शन-चिंतन का मूल विश्व शांति और चराचर जगत का कल्याण है। प्रो. ढकाल महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के तकनीकी सत्र को संबोधित कर रहे थे।

महाराणा प्रताप पीजी कालेज में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मंचासीन प्रो.राजाराम सुवेदी, प्रो.नवीन बंधु पहाड़ी व अन्य ● सौ : गोवि

प्रो. ढकाल ने कहा कि भारत में सर्वपूज्य गुरु गोरखनाथ नेपाल के भी आदिगुरु हैं। नेपाल के गोरखा लोगों का 'गोरखा' नाम गुरु गोरखनाथ के नाम से ही संबंध रखता है। मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल के आपसी संबंध बहुत गहरे हैं। लुंबिनी विश्वविद्यालय, नेपाल के सहायक आचार्य डा. शिवकांत दुबे ने कहा कि भारत और नेपाल का संबंध रोटी-बेटी का है। इन संबंधों का मुख्य आधार सनातन धर्म एवं संस्कृति है। इस सत्र की अध्यक्षता गोरखपुर विश्वविद्यालय की कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. कीर्ति पांडेय ने की। इस सत्र में प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव ने भी विचार रखे।

पारस्परिक सहयोग से और मजबूत होंगे संबंध : कंडेल: विशिष्ट सत्र में विषय विशेषज्ञ नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों राष्ट्रों के संबंध को एक दूसरे के पारस्परिक सहयोग से और मजबूत बनाया जा सकेगा। इसका एक उदाहरण गोरक्षपीठ की भूमिका है जो इस संबंध को मजबूत बनाने में सराहनीय योगदान देती है। नेपाली कांग्रेस की केंद्रीय सदस्य पुष्पा भुषाल ने कहा कि राजनीतिक तंत्र, कूटनीतिक तंत्र, आर्थिक तंत्र दोनों ही राष्ट्रों की लगभग एक समान है। विधायक कोसी प्रदेश (नेपाल) भीम पराजुली ने कहा कि भारत-नेपाल संबंध केवल राजनीतिक नहीं है बल्कि यह दोनों देशों के जनमानस का संबंध है। ग्रामीण विकास अध्ययन दांग, नेपाल के प्राध्यापक डा. शरद शर्मा ने कहा कि युवा शक्ति की भागीदारी से दोनों राष्ट्रों के मध्य व्यावहारिक संबंधों को मजबूती मिलेगी। नेपाल के प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार कृष्णा अनिरुद्ध गौतम ने आर्थिक संबंधों की भी मजबूती पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा ने कहा कि भारत-नेपाल संबंधों की उन्नति में बहुआयामी पक्ष की जानकारी आवश्यक है।

भारत-नेपाल का संबंध हवा और पानी का भी : प्रो. पौडेल: एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि भारत, नेपाल का संबंध हवा व पानी का भी है। विषय विशेषज्ञ नेपाल के प्रतिष्ठित साहित्यकार नवीन बंधु पहाड़ी ने कहा कि दोनों देश पौराणिक काल से एक संस्कृति के पोषक हैं। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडो के सेवानिवृत्ति प्रो. राजाराम सुवेदी आदि ने भी विचार रखे। गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजवंत राव व अन्य ने भारत-नेपाल के मैत्री संबंधों की ऐतिहासिकता पर मंथन किया। एक अन्य सत्र की अध्यक्षता त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडो के प्रो. सुबोध शुक्ला ने की। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

amarujala.com
गोरखपुर | रविवार, 3 मार्च 2024
8

'सीमाओं से परे हैं भारत-नेपाल के सांस्कृतिक संबंध'

महाराणा प्रताप महाविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में बोले प्रो. भागवत

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। भारत और नेपाल भौगोलिक रूप से भले ही सीमाओं में बंटे हैं, लेकिन दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध सीमाओं से परे हैं। दोनों के आध्यात्मिक दर्शन-चिंतन का मूल विश्व शांति और चराचर जगत का कल्याण है। भारत में सर्व पूज्य गुरु गोरखनाथ नेपाल के भी आदि गुरु हैं। नेपाल के गोरखा लोगों का 'गोरखा' नाम गुरु गोरखनाथ के नाम से ही संबंध रखता है।

ये बातें वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडो (नेपाल) के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल ने महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़ में आयोजित 'भारत-नेपाल सांस्कृतिक अंतरसंबंधों की विकास यात्रा : अतीत से वर्तमान तक' विषयक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के दूसरे दिन तकनीकी सत्र को संबोधित करते हुए कहीं।

मध्य पश्चिम विश्वविद्यालय, सुर्खेत, नेपाल के उप कुलपति नंद बहादुर सिंह ने कहा कि भारत और नेपाल के आपसी संबंध बहुत गहरे हैं। लुंबिनी विश्वविद्यालय, नेपाल के सहायक आचार्य डॉ. शिवकांत दूबे ने कहा कि भारत-नेपाल का संबंध रोटी-बेटी का है। इन संबंधों का मुख्य आधार सनातन धर्म एवं संस्कृति है। इस सत्र की अध्यक्षता डीडीयू की कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. कीर्ति पांडेय ने की। डीडीयू के सेवानिवृत प्रो. सुधाकर लाल श्रीवास्तव ने भी विचार रखे।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में मंचासीन वाल्मीकि विद्यापीठ, काठमांडो के प्राचार्य प्रो. भागवत ढकाल, प्रो. राजवंत राव, डॉ. पदाजा सिंह व अन्य। स्रोत: महाविद्यालय

पारस्परिक सहयोग से और मजबूत होंगे संबंध : कंडेल

विशिष्ट सत्र में विषय विशेषज्ञ नेपाल के पूर्व गृह राज्यमंत्री देवेंद्र राज कंडेल ने कहा कि भारत और नेपाल, दोनों राष्ट्रों के संबंध को एक दूसरे के पारस्परिक सहयोग से और मजबूत बनाया जा सकेगा। नेपाली कांग्रेस की केंद्रीय सदस्य पुष्पा भुषाल ने कहा कि राजनीतिक तंत्र, कूटनीतिक तंत्र, आर्थिक तंत्र दोनों ही राष्ट्रों की लगभग एक समान है। विधायक कोसी प्रदेश (नेपाल) भीम पराजुली ने कहा कि भारत-नेपाल संबंध केवल राजनीतिक नहीं है बल्कि यह दोनों देशों के जनमानस का संबंध है। ग्रामीण विकास अध्ययन दांग, नेपाल के प्राध्यापक डॉ. शरद शर्मा ने कहा कि युवा शक्ति की भागीदारी से दोनों राष्ट्रों के मध्य व्यावहारिक संबंधों को मजबूती मिलेगी। नेपाल के प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार कृष्णा अनिरुद्ध गौतम ने आर्थिक संबंधों की भी मजबूती पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए डीडीयू के रक्षा अध्ययन विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हर्ष सिन्हा ने कहा कि भारत-नेपाल संबंधों की उन्नति में बहुआयामी पक्ष की जानकारी आवश्यक है।

भारत-नेपाल का संबंध हवा और पानी का भी

एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र के कार्यकारी निदेशक प्रो. सुधन पौडेल ने कहा कि भारत, नेपाल का संबंध हवा व पानी का भी है। विषय विशेषज्ञ नेपाल के प्रतिष्ठित साहित्यकार नवीन बंधु पहाड़ी ने कहा कि दोनों देश पौराणिक काल से एक संस्कृति के पोषक हैं। त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडो के सेवानिवृत्ति प्रो. राजाराम सुवेदी आदि ने भी विचार रखे। गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राजवंत राव व अन्य ने भारत-नेपाल के मैत्री संबंधों की ऐतिहासिकता पर मंथन किया। एक अन्य सत्र की अध्यक्षता त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडो के प्रो. सुबोध शुक्ला ने की। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

Scanned with OKEN Scanner